20 June 2021 satta express.pdf

आर.एन.आई.नं.- UPHIN/2009/44666

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

सत्ता एक्सप्रेस

डी.ए.वी.पी. नई दिल्ली एवं राज्य सरकार द्वारा विज्ञापन मान्यता प्राप्त

वर्ष: 12 अंक : 246 कानपुर देहात, रविवार 20 जून 2021 Email: sattaexpress@rediffmail.com पृष्ठ : 4 मूल्य : एक रुपया

आय,जल संरक्षण और पौष्टिक आहार हेतु वर्षा ऋतु में करे मछली पालन- डॉ आनंद स्वरूप श्रीवास्तव

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ डी.आर. सिंह के निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ आनन्द स्वरूप श्रीवास्तव, प्रभारी मत्स्यकी ने बताया कि वर्षा ऋतु मत्स्य पालन व्यवसाय के लिए सबसेमहत्वपूर्ण समय होता है। इस व्यवसाय से अच्छी आमदनी के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है तथा जल संरक्षण भी होता है। कोरोना लॉक डाउन के कारण हुई आर्थिक छति की भरपाई के लिये ,इस समय का यदि मत्स्य पालक सदुपयोग कर ले तो मछली पालन से अच्छी आय अर्जित की जा सकती है। चूंकि अधिकांश मछलियां वर्षा ऋतु में प्रजनन करती हैं और इनके बच्चे जिन्हें हम फ्राई,या जीरा कहते है तैयार होते है। मत्स्य नर्सरी में इनका संचय कर मत्स्यअंगुलिका तैयार की जाती है। यही मत्स्य अंगुलिका का बरसात के समय संचय कर मत्स्य उत्पादन किया जाता है। यह सब कार्य वर्षा ऋतु में ही किये जाते है । मछली पालन से एक ओर जहां अच्छी आय के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है वही दूसरी ओर जल संचय तथा भूमिगत जल के स्तर में वृद्धि भी होती है।मत्स्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार 2018 –19 में प्रदेश में मछली का की उत्पादकता लगभग 4500 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी तथा प्रदेश में उत्पादन लगभग 6,62000 मीट्रिक टन था। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है। किसान भाई मत्स्य पालन के साथ–साथ बत्तख, उद्यान,पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने बताया की मछली एक शक्ति वर्धक एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ है यह खाने में सुपाच्य होती है। और इसमें आवश्यक अमीनो एसिड तथा प्रोटीन भी अधिक मात्रा में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें वसा, कैल्शियम व खनिज भी पाए जाते हैं जिसके कारण संतुलित आहार में मछली की विशेष उपयोगिता है। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि गांव क्षेत्र में कृषक भाई अनुपयोगी तालाबों की सफाई करने के उपरांत उसमे मत्स्य अंगुलिकाओ का संचय करे।उन्होंने बताया की वर्षा का मौसम मछली पालने के लिए उपयुक्त है। मत्स्य व्यवसाय एक श्रम प्रधान व्यवसाय है इस व्यवसाय में कम पूंजी लगाने पर अधिकतम लाभ अर्जित कर सकते हैं उन्होंने बताया कि मछली पालने के लिए सबसे पहले तालाबों में उपस्थित खरपतवार की सफाई कर ले। तालाबों में खरपतवार जैसे जलकुंभी, लैमिना, हाइड्रिला आदि होते हैं। अधिक जलीय वनस्पति होने की दशा में रसायनों का प्रयोग जैसे फरनेक्सान 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तालाब में प्रयोग कर सफाई करनी चाहिए तथा बंधे आदि दुरुस्त कर लेना चाहिए।उन्होंने बताया की मछलियों की बढ़वार में जल की छारीयता का विशेष महत्व है। मछली का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए जल की छारियता 7. 5–8.5 तथा घुलित ऑक्सीजन की मात्रा 5 मिलीग्राम प्रति लीटर आवश्यक होती है जल की उत्पादकता हेतु छारीयता का निर्धारण करने के लिए गोबर की खाद और चूने का प्रयोग किया जाता है उन्होंने बताया कि चूना जल की छारीयता का संतुलन करता है। साथ ही साथ मछलियों में होने वही अधिकांश बीमारियो से बचाव भी होता है। वही गोबर की खाद से मछली का प्राकृतिक भोजन जिसे प्लेकटान कहते हैं उत्पन्न होता है। परंतु जब तालाब में वैज्ञानिक तरीके से मछलियों को अधिक संख्या में पाला तो उनके भोजन की अतिरिक्त व्यवस्था करनी होती है।इसके लिए सरसो की खली और धान के कना का 50– 50 प्रतिशत (वजन) के हिसाब से भोजन के लिए प्रयोग करते है। इससे मछलियों को पौष्टिक आहार प्राप्त होता है और अच्छी बढ़वार मिलती है। उन्होंने कहा कि जब तालाब की तैयारी हो जाए तो मत्स्य विभाग के माध्यम से मछली के बच्चों जिन्हें अंगुलिका कहते है,की बुकिंग करा लें उन्होंने बताया कि आमतौर पर मछली पालन हेतु भारतीय मछली मेजर कॉर्प (रोहू,कतला और नैन) और विदेशी प्रजाति में कॉमन कार्प,ग्रास कॉर्प और सिल्वर कॉर्प का चयन सबसे उपयुक्त रहता है । आजकल शहरों में पंगेसियस मछली की भी बहुत मांग है, मत्स्य पालक समय की मांग के अनुसार पंगेसियस मछली का अवश्य उत्पादन करे। मत्स्य अंगुलिका जितनी बड़ी होंगी उतना उपयुक्त होगा छोटे बच्चों में मृत्यु दर होना स्वाभविक है। वर्षा ऋतु में एक बात का मुख्य रूप से ध्यान रखना चाहिये, चुकी मछली पानी मे घुलित ऑक्सीजन का प्रयोग अपने श्वसन के लिए करती है और पानी में इसकी उपलब्धतता जलीय वनस्पति के प्रकाश संश्लेषण के द्वारा होती है।वर्षा ऋतु में अधिक समय तक बदली होने के कारण से कभी कभी प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया कम हो जाती है परिणाम स्वरूप ऑक्सीजन की कमी हो जाती है।और मछली अपना मुंह ऊपर निकलती हुई दिखती है। यदि ऐसा हो तो पानी में उथल–पुथल करना चाहिए और ताजे पानी की फव्वारा रूप में आपूर्ति करना चाहिए जिससे वातावरण की ऑक्सीजन पानी मे घुल जाए। डॉ आनन्द श्रीवास्तव ने बताया की मत्स्य पालक वैज्ञानिक विधि से मछली पालन करके एक हेक्टेयर तालाब से प्रतिवर्ष ६ 2 से 3 लाख की आमदनीआसानी से प्राप्त कर सकते हैं।

लखनऊ संस्करण
वर्ष-05, अंक -235
रविवार, 20 जून, 2021
पृष्ठ 12
मूल्य 3 रु*
लखनऊ, नोएडा, झांसी और वेबसाइट से प्रकाशित

दैनिक भास्कर

देश का सबसे विश्वसनीय अखबार

For epaper → www.epdainikbhaskar.com

अनुपयोगी तालाबों की सफाई कर मत्स्य अंगुलिकाओं का संचय करें, वर्षा का मौसम मछली पालने के लिए उपयुक्त : डॉ आनंद

भास्कर न्यूज

कानपुर। सीएसए के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ. आनन्द स्वरूप श्रीवास्तव, प्रभारी मत्स्यकी ने बताया कि वर्षा ऋतु मत्स्य पालन व्यवसाय के लिए सबसे महत्वपूर्ण समय होता है। इस व्यवसाय से अच्छी आमदनी के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है तथा जल संरक्षण भी होता है।

कोरोना लॉक डाउन के कारण हुई आर्थिक क्षति की भरपाई के लिये ,इस समय का यदि मत्स्य पालक सदुपयोग कर ले तो मछली पालन से अच्छी आय अर्जित की जा सकती है।अधिकांश मछलियां वर्षा ऋतु में प्रजनन करती हैं और इनके बच्चे जिन्हें हम फ्राई,या जीरा कहते है तैयार होते है। मत्स्य नर्सरी में इनका संचय कर मत्स्य अंगुलिका तैयार की जाती है। यही मत्स्य अंगुलिका का बरसात के समय संचय कर मत्स्य उत्पादन किया जाता है। यह सब कार्य वर्षा ऋतु में ही किये जाते है। मछली पालन से एक ओर जहां अच्छी आय के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है वही दूसरी ओर जल संचय तथा भूमिगत जल के स्तर में वृद्धि भी होती है।मत्स्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार 2018 -19 में प्रदेश में मछली का की उत्पादकता लगभग 4500 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी तथा प्रदेश में उत्पादन लगभग 6,62000 मीट्रिक टन था। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है। किसान भाई मत्स्य पालन के साथ-साथ बत्तख, उद्यान, पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने बताया की मछली एक शक्ति वर्धक एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ है यह खाने में सुपाच्य होती है। और इसमें आवश्यक अमीनो एसिड तथा प्रोटीन भी अधिक मात्रा में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें वसा, कैल्शियम व खनिज भी

पाए जाते हैं जिसके कारण संतुलित आहार में मछली की विशेष उपयोगिता है। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि गांव क्षेत्र में कृषक भाई अनुपयोगी तालाबों की सफाई करने के उपरांत उसमे मत्स्य अंगुलिकाओ का संचय करें। उन्होंने बताया की वर्षा का मौसम मछली पालने के लिए उपयुक्त है। मत्स्य व्यवसाय एक श्रम प्रधान व्यवसाय है इस व्यवसाय में कम पूंजी लगाने पर अधिकतम लाभ अर्जित कर सकते हैं उन्होंने बताया कि मछली पालने के लिए सबसे पहले तालाबों में उपस्थित खरपतवार की सफाई कर ले। तालाबों में खरपतवार जैसे जलकुंभी, लैमिना, हाइड्रिला आदि होते हैं। अधिक जलीय वनस्पति होने की दशा में रसायनों का प्रयोग जैसे फ़रनेक्सान 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तालाब में प्रयोग कर सफाई करनी चाहिए तथा बंधे आदि दुरुस्त कर लेना चाहिए। उन्होंने बताया की मछलियों की बढ़वार में जल की क्षारीयता का विशेष महत्व है। मछली का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए जल की क्षारियता 7.5-8.5 तथा घुलित ऑक्सीजन की मात्रा 5 मिलीग्राम प्रति लीटर आवश्यक होती है जल की उत्पादकता हेतु क्षारीयता का निर्धारण करने के लिए गोबर की खाद और चूने का प्रयोग किया जाता है उन्होंने बताया कि चूना जल की क्षारीयता का संतुलन करता है। साथ ही साथ मछलियों में होने वही अधिकांश बीमारियो से बचाव भी होता है। वही गोबर की खाद से मछली का प्राकृतिक भोजन जिसे प्लेकटान कहते हैं उत्पन्न होता है। परंतु जब तालाब में वैज्ञानिक तरीके से मछलियों को अधिक संख्या में पाला तो उनके भोजन की अतिरिक्त व्यवस्था करनी होती है।इसके लिए सरसो की खली और धान के कना का 50- 50 प्रतिशत (वजन) के हिसाब से भोजन के लिए प्रयोग करते है।

आज
कानपुर
20 जून 2021 4

जल संरक्षण और पौष्टिक आहार के लिए वर्षा ऋतु में करें मछली पालन

❑ भारतीय बाजारों में रोहू, कतला, नैन और विदेशी प्रजाति में कॉमन कार्प, ग्रास कॉर्प की बहुंत डिमांड

कानपुर 19 जून। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डा. डी.आर. सिंह के निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ. आनन्द स्वरूप श्रीवास्तव ने बताया कि वर्षा ऋतु मत्स्य पालन व्यवसाय के लिए सबसे महत्वपूर्ण समय होता है। इस व्यवसाय से अच्छी आमदनी के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है तथा जल संरक्षण भी होता है। कोरोना लॉकडाउन के कारण हुई आर्थिक क्षति की भरपाई के लिये मत्स्य पालक से अच्छी आय अर्जित की जा सकती है। अधिकांश मछलियां वर्षा ऋतु में प्रजनन करती हैं और इनके बच्चे जिन्हें हम फ्राई,या जीरा कहते है तैयार होते है। मत्स्य नर्सरी में इनका संचय कर मत्स्य अंगुलिका तैयार की जाती है। वही दूसरी ओर जल संचय तथा भूमिगत जल के स्तर में वृद्धि भी होती है।मत्स्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार 2018 -19 में प्रदेश में मछली का की उत्पादकता लगभग 4500 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी तथा प्रदेश में उत्पादन लगभग 6,62000 मीट्रिक टन था। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है। किसान भाई मत्स्य पालन के साथ-साथ बत्तख, उद्यान,पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने बताया की मछली एक शक्ति वर्धक एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ है यह खाने में सुपाच्य होती है और इसमें आवश्यक अमीनो एसिड तथा प्रोटीन भी अधिक मात्रा में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें वसा, कैल्शियम व खनिज भी पाए जाते हैं जिसके कारण संतुलित आहार में मछली की विशेष उपयोगिता है। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि गांव क्षेत्र में सबसे पहले तालाबों में उपस्थित खरपतवार की सफाई कर ले। तालाबों में खरपतवार जैसे जलकुंभी, लैमिना, हाइड्रिला आदि होते हैं। अधिक जलीय वनस्पति होने की दशा में रसायनों का प्रयोग जैसे रनेक्सान 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तालाब में प्रयोग कर सफाई करनी चाहिए तथा बंधे आदि दुरुस्त कर लेना चाहिए।उन्होंने बताया की मछलियों की बढ़वार में जल की छारीयता का विशेष महत्व है। मछली का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए जल की छारियता 7.5-8.5 तथा घुलित ऑक्सीजन की मात्रा 5 मिलीग्राम प्रति लीटर आवश्यक होती है जल की उत्पादकता हेतु छारीयता का निर्धारण करने के लिए गोबर की खाद और चूने का प्रयोग किया जाता है। सरसो की खली और धान के कना का 50- 50 प्रतिशत (वजन) के हिसाब से भोजन के लिए प्रयोग करते है। इससे मछलियों को पौष्टिक आहार प्राप्त होता है। उन्होंने बताया कि आमतौर पर मछली पालन हेतु भारतीय मछली मेजर कॉर्प (रोहू,कतला और नैन) और विदेशी प्रजाति में कॉमन कार्प,ग्रास कॉर्प और सिल्वर कॉर्प का चयन सबसे उपयुक्त रहता है । आजकल शहरों में पंगेसियस मछली की भी बहुत मांग है, मत्स्य पालक समय की मांग के अनुसार पंगेसियस मछली का अवश्य उत्पादन करे। उन्होंने बताया की मत्स्य पालक वैज्ञानिक विधि से मछली पालन करके एक हेक्टेयर तालाब से प्रतिवर्ष 2 से 3 लाख की आमदनी प्राप्त कर सकते हैं।

आय,जल संरक्षण और पौष्टिक आहार हेतु वर्षा ऋतु में करें मछली पालन : डा. आनंद स्वरूप

20/06/2021 साध्य हलचल

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉक्टर डो.आर. सिंह के निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ. आनन्द स्वरूप श्रीवास्तव, प्रभारी मत्स्यकी ने बताया कि वर्षा ऋतु मत्स्य पालन व्यवसाय के लिए सबसे महत्वपूर्ण समय होता है। इस व्यवसाय से अच्छी आमदनी के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है तथा जल संरक्षण भी होता है। कोरोना लॉक डाउन के कारण हुई आर्थिक छति की भरपाई के लिये ,इस समय का यदि मत्स्य पालक सदुपयोग कर ले तो मछली पालन से अच्छी आय अर्जित की जा सकती है। चूकि अधिकांश मछलियां वर्षा ऋतु में प्रजनन करती हैं और इनके बच्चे जिन्हें हम फ्राई,या जीरा कहते है तैयार होते है। मत्स्य नर्सरी में इनका संचय कर मत्स्यअंगुलिका तैयार की जाती है। यही मत्स्य अंगुलिका का बरसात के समय संचय कर मत्स्य उत्पादन किया जाता है। यह सब कार्य वर्षा ऋतु में ही किये जाते है । मछली पालन से एक ओर जहां अच्छी आय के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है वही दूसरी ओर जल संचय तथा भूगिगत जल के स्तर में वृद्धि भी होती है।मत्स्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार 2018 -19 में प्रदेश में मछली का को उत्पादकता लगभग 4500 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी तथा प्रदेश में उत्पादन लगभग 662000 मीट्रिक टन था। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है। किसान भाई मत्स्य पालन के साथ-साथ बत्तख, उद्यान,पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने बताया की मछली एक शक्ति वर्धक एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ है यह खाने में सुपाच्य होती है। और इसमें आवश्यक अमीनो एसिड तथा प्रोटीन भी अधिक मात्रा में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें वसा, कैल्शियम व खनिज भी पाए जाते हैं जिसके कारण संतुलित आहार मे मछली की विशेष उपयोगिता है। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि गांव क्षेत्र में कृषक भाई अनुपयोगी तालाबों की सफाई करने के उपरांत उसमे मत्स्य अंगुलिकाओ का संचय करे।उन्होंने बताया की वर्षा का पौराग मछली पालने के लिए उपयुक्त है। मत्स्य व्यवसाय एक श्रम प्रधान व्यवसाय है इस व्यवसाय में कम पूंजी लगाने पर अधिकतम लाभ अर्जित कर सकते हैं उन्होंने बताया कि मछली पालने के लिए सबसे पहले तालाबों में उपस्थित खरपतवार की सफाई कर ले। तालाबों में खरपतवार जैसे जलकुंभी लैमिना, हाइड्रिला आदि होते हैं। अधिक जलीय वनस्पति होने की दशा में रसायनों का प्रयोग जैसे फुरनेक्सान 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तालाब में प्रयोग कर सफाई करनी चाहिए तथा बंधे आदि दुरुस्त कर लेना चाहिए।उन्होंने बताया की मछलियों की बढ़वार में जल की छारीयता का विशेष महत्व है। मछली का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए जल की छारियता 7.5-8.5 तथा घुलित ऑक्सीजन की मात्रा 5 मिलीग्राम प्रति लीटर आवश्यक होती है जल की उत्पादकता हेतु छारीयता का निर्धारण करने के लिए गोबर की खाद और चूने का प्रयोग किया जाता है उन्होंने बताया कि चूना जल की छारीयता का संतुलन करता है। साथ ही साथ मछलियों में होने वहो अधिकांश बीमारियो से बचाव भी होता है। वही गोबर की खाद से मछली का प्राकृतिक भोजन जिसे प्लेकटान कहते हैं उत्पन्न होता है। परंतु जब तालाब में वैज्ञानिक तरीके से मछलियों को अधिक संख्या में पाला तो उनके भोजन की अतिरिक्त व्यवस्था करनी होती है।

ail:-vidhankesari1@gmail.com, vidhankesarinews@gmail.com www.v

हिन्दी दैनिक

विधान केसरी

...खबर सिर्फ जनहित के लिए

तत्काल संस्करण, रविवार 20 जून 2021 (वर्ष-6 अंक 364), मूल्य-2.00 रुपये पृष्ठ-14

नवनिर्वाचित प्रधानों ने ली शपथ... पेज-3

हर दिन 6 लाख लोगों को टीका... पेज-14

ट्विटर पर लगाम-दिखे

संक्षेप में | लोकसभा अध्यक्ष के दो साल पूरे होने पर प्रधानमंत्री ने की तारीफ, कहा | 'उड़न सिख' का

आय,जल संरक्षण और पौष्टिक आहार हेतु वर्षा ऋतु में करे मछली पालनः डॉ आनंद स्वरूप

कानपुर (विधान केसरी)। सीएसए के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह के निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ. आनन्द स्वरूप श्रीवास्तव, प्रभारी मत्स्यकी ने बताया कि वर्षा ऋतु मत्स्य पालन व्यवसाय के लिए सबसे महत्वपूर्ण समय होता है। इस व्यवसाय से अच्छी आमदनी के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है तथा जल संरक्षण भी होता है। कोरोना लॉक डाउन के कारण हुई आर्थिक छति की भरपाई के लिये ,इस समय का यदि मत्स्य पालक सदुपयोग कर ले तो मछली पालन से अच्छी आय अर्जित की जा सकती है। चूँकि अधिकांश मछलियां वर्षा ऋतु में प्रजनन करती हैं और इनके बच्चे जिन्हें हम फ्राई,या जीरा कहते है तैयार होते है। मत्स्य नर्सरी में इनका संचय कर मत्स्यअंगुलिका तैयार की जाती है। यही मत्स्य अंगुलिका का बरसात के समय संचय कर मत्स्य उत्पादन किया जाता है। यह सब कार्य वर्षा ऋतु में ही किये जाते है । मछली पालन से एक ओर जहां अच्छी आय के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है वही दूसरी ओर जल संचय तथा भूमिगत जल के स्तर में वृद्धि भी होती है।मत्स्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार 2018 -19 में प्रदेश में मछली का की उत्पादकता लगभग 4500 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी तथा प्रदेश में उत्पादन लगभग 6,62000 मीट्रिक टन था। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है। किसान भाई मत्स्य पालन के साथ-साथ बत्तख, उद्यान,पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने बताया की मछली एक शक्ति वर्धक एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ है यह खाने में सुपाच्य होती है। और इसमें आवश्यक अमीनो एसिड तथा प्रोटीन भी अधिक मात्रा में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें वसा, कैल्शियम व खनिज भी पाए जाते हैं जिसके कारण संतुलित आहार में मछली की विशेष उपयोगिता है। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि गांव क्षेत्र में कृषक भाई अनुपयोगी तालाबों की सफाई करने के उपरांत उसमे मत्स्य अंगुलिकाओ का संचय करे।उन्होंने बताया की वर्षा का मौसम मछली पालने के लिए उपयुक्त है। मत्स्य व्यवसाय एक श्रम प्रधान व्यवसाय है इस व्यवसाय में कम पूंजी लगाने पर अधिकतम लाभ अर्जित कर सकते हैं उन्होंने बताया कि मछली पालने के लिए सबसे पहले तालाबों में उपस्थित खरपतवार की सफाई कर ले। तालाबों में खरपतवार जैसे जलकुंभी लैमिना, हाइड्रिला आदि होते हैं।

20 June_Jan express.pdf - Read-only

जन एक्सप्रेस

/janexpresslive

लखनऊ, रविवार, 20 जून, 2021, वर्ष : 12, अंक : 246, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹3.00/-

www.janexpresslive.com/epaper

'वर्षा ऋतु' ही मत्स्य पालन के लिए सबसे महत्वपूर्ण समय

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। वर्षा ऋतु मत्स्य पालन के लिए सबसे महत्वपूर्ण समय है मछली पालन से जहां एक और अच्छी आय के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है वहीं दूसरी ओर जल संचय तथा भूमिगत जल स्तर में वृद्धि भी होती है मछली एक शक्ति वर्धक और पौष्टिक खाद्य पदार्थ है जो खाने में सुपाच्य होती है तथा इसमें आवश्यक अमीनो एसिड तथा प्रोटीन के साथ वसा, कैल्शियम व खनिज भी पाए जाते हैं।यह बात सीएसएयू मत्स्य विशेषज्ञ डॉक्टर आनन्द स्वरूप श्रीवास्तव प्रभारी मत्स्यकी ने बताते हुए कहा कि गांव क्षेत्र में किसान अनुपयोगी तालाबों की सफाई करने के बाद उसमें मत्स्य अंगुलिकाओ का संचय कर मत्स्य उत्पादन कर सकते हैं यह एक श्रम प्रधान व्यवसाय है जिसे कम पूंजी लगाने पर अधिकतम लाभ अर्जित

किया जा सकता है।

उन्होंने बताया कि आमतौर पर मछली पालन के लिए भारतीय मछली मेजर कॉर्प (रोहू, कतला और नैन)और विदेशी प्रजाति में कॉमन कार्प, ग्रास कॉर्प और सिल्वर कॉर्प का चयन सबसे उपयुक्त रहता है। आजकल शहरों में पंगेसियस मछली की भी बहुत मांग है, मत्स्य पालक समय की मांग के अनुसार पंगेसियस मछली का अवश्य उत्पादन करे। वर्षा ऋतु में एक बात का मुख्य रूप से ध्यान रखना चाहिये, चुकी मछली पानी मे घुलित ऑक्सीजन का प्रयोग अपने श्वसन के लिए करती है और पानी में इसकी उपलब्धतता जलीय वनस्पति के प्रकाश संश्लेषण के द्वारा होती है।वर्षा ऋतु में अधिक समय तक बदली होने के कारण से कभी कभी प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया कम हो जाती है परिणाम स्वरूप ऑक्सीजन की कमी हो जाती है और मछली अपना मुंह ऊपर निकलती हुई दिखती है। यदि ऐसा हो तो पानी में उथल-पुथल करना चाहिए और ताजे पानी की फव्वारा रूप में आपूर्ति करना चाहिए जिससे वातावरण की ऑक्सीजन पानी मे घुल जाए।

वैज्ञानिक विधि से और भी बढ़ा सकते हैं मछली उत्पादन

मत्स्य विभाग के आकड़ो के अनुसार 2018 -19 में प्रदेश में मछली की उत्पादकता लगभग 4500 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी तथा प्रदेश में उत्पादन लगभग 6,62000 मीट्रिक टन था। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है। किसान मत्स्य पालन के साथ-साथ बतख, उद्यान,पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते हैं।

WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रेस

अंक : 264 कानपुर नगर

19 जून 2021, शनिवार

www.worldkhabarexpress.media MID DAY E-PAPER www.worldkhabarexpress.com

मिल्खा सिंह को याद कर भावुक हुए फरहान अख्तर... पेज 8

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ. आनंद श्रीवास्त ने दिए किसानों को टिप्स:

'बारिश में करें मछली पालन, बढ़ेगी आमदनी'

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ. आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने बताया कि वर्षा ऋतु, मत्स्य पालन व्यवसाय के लिए सबसे महत्वपूर्ण समय होता है। इस व्यवसाय से अच्छी आमदनी के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है और जल संरक्षण भी होता है।

उन्होंने कहा कि कोरोना काल में लॉकडाउन के कारण हुई आर्थिक क्षति की भरपाई के लिए इस समय का यदि मत्स्य पालक सदुपयोग कर ले तो मछली पालन से अच्छी आय अर्जित की जा सकती है। चूंकि अधिकांश मछलियां, वर्षा ऋतु में प्रजनन करती हैं और इनके बच्चे जिन्हें हम फ्राई या जीरा कहते है, तैयार होते है। मत्स्य नर्सरी में इनका संचय कर मत्स्य अंगुलिका तैयार की जाती है। यही मत्स्य अंगुलिका का तालाब के समय संचय कर मत्स्य उत्पादन किया जाता है। यह सब कार्य वर्षा ऋतु में ही किए जाते है। मछली पालन से एक ओर जहां अच्छी आय के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है, वहीं दूसरी ओर जल संचय तथा भूमिगत जल के स्तर में वृद्धि भी होती है। मत्स्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार, 2018 -19 में प्रदेश में मछली का की उत्पादकता लगभग 4500 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी तथा प्रदेश में उत्पादन लगभग 6,62000 मीट्रिक टन था। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है। किसान, मत्स्य पालन के साथ-साथ बतख, उद्यान, पशुपालन भी कर अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते है। उन्होंने बताया की

मछली एक शक्ति वर्धक एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ है, यह खाने में सुपाच्य होती है और इसमें आवश्यक अमीनो एसिड तथा प्रोटीन भी अधिक मात्रा में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें वसा, कैल्शियम व खनिज भी पाए जाते है जिसके कारण संतुलित आहार में मछली की विशेष उपयोगिता है। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि गांव क्षेत्र में किसान, अनुपयोगी तालाबों की सफाई करने के बाद उसमें मत्स्य अंगुलिकाओं का संचय करें। वर्षा का मौसम मछली पालने के लिए उपयुक्त है। मत्स्य व्यवसाय एक श्रम प्रधान व्यवसाय है । इस व्यवसाय में कम पूंजी लगाने पर अधिकतम लाभ अर्जित कर सकते हैं । उन्होंने बताया कि मछली पालने के लिए सबसे पहले तालाबों में उपस्थित खरपतवार की सफाई कर लें। तालाबों में खरपतवार जैसे जलकुंभी, सैविना, हाइड्रिला आदि होते है। अधिक जलीय वनस्पति होने की दशा में रसायनों का प्रयोग जैसे

फार्मेलीन 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तालाब में प्रयोग कर सफाई करनी चाहिए तथा बांधे आदि दुरुस्त कर लेना चाहिए। उन्होंने बताया की मछलियों की बढ़वार में जल की क्षारीयता का विशेष महत्व है। मछली का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए जल की क्षारियता 7.5-8.5 तथा घुलित ऑक्सीजन की मात्रा 5 मिलीग्राम प्रति लीटर आवश्यक होती है। जल की उत्पादकता के लिए क्षारियता का निर्धारण करने को गोबर की खाद और चूने का प्रयोग किया जाता है। उन्होंने बताया कि चूना, जल की क्षारीयता का संतुलन करता है। साथ ही मछलियों में होने वाली अधिकांश बीमारियों से बचाव भी होता है। गोबर की खाद से मछली का प्राकृतिक भोजन जिसे प्लेंकटान कहते हैं, उत्पन्न होता है लेकिन जब तालाब में वैज्ञानिक तरीके से मछलियों को अधिक संख्या में पाला तो उनके भोजन की अतिरिक्त व्यवस्था करनी होती है। इसके लिए सरसों की खली और धान के कना का 50- 50 प्रतिशत (वजन) के हिसाब से भोजन के लिए प्रयोग करते है। इससे मछलियों को पौष्टिक आहार प्राप्त होता है और अच्छी बढ़वार मिलती है। उन्होंने कहा कि जब तालाब की तैयारी हो जाए तो मत्स्य विभाग के माध्यम से मछली के बच्चों जिन्हें अंगुलिका कहते है, की बुकिंग करा लें। आमतौर पर मछली पालन के लिए भारतीय मछली मेजर कॉर्प (रोहू, कतला और नैन) और विदेशी प्रजाति में कॉमन कार्प, ग्रास कॉर्प और सिल्वर कॉर्प का पालन सबसे उपयुक्त रहता है। आजकल शहरों में पंगेसियस मछली की भी बहुत मांग है, मत्स्य पालक समय की मांग के अनुसार पंगेसियस मछली का अवश्य उत्पादन करें। मत्स्य अंगुलिका जितनी बड़ी होंगी, उतना उपयुक्त होगा। छोटे बच्चों में मृत्यु दर होना स्वाभाविक है। वर्षा ऋतु में एक बात का मुख्य रूप से ध्यान रखना चाहिए।

यह भी रखें ध्यान

उन्होंने कहा कि चूंकि मछली, पानी में घुलित ऑक्सीजन का प्रयोग अपने श्वसन के लिए करती है और पानी में इसकी उपलब्धता जलीय वनस्पति के प्रकाश संश्लेषण से होती है। वर्षा ऋतु में अधिक समय तक बदली होने के कारण से कभी-कभी प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया कम हो जाती है। परिणाम स्वरूप ऑक्सीजन की कमी हो जाती है और मछली अपना मुंह ऊपर निकलती हुई दिखती है। यदि ऐसा हो तो पानी में उथल-पुथल करना चाहिए और ताजे पानी की तत्काल रूप में आपूर्ति करना चाहिए। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया की मत्स्य पालक, वैज्ञानिक विधि से मछली पालन करके एक हेक्टेयर तालाब से प्रतिवर्ष 2 से 3 लाख रुपए की आमदनी आसानी से प्राप्त कर सकते है।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

RNI-NO-UTTBIL/2007/20700

3 कैबिनेट मंत्री हरक सिंह रावत ने जाहिर की अपनी नाराजगी

वर्ष:12 | अंक:171 | देहरादून, शनिवार, 19 जून, 2021 | पृष्ठ:08 | मूल्य:2/रु. प्रति

वर्षाऋतु में करे मछलीपालन: डॉ. एएस श्रीवास्तव

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ० आनन्द स्वरूप श्रीवास्तव, प्रभारी मत्स्यकी ने बताया कि वर्षा ऋतु मत्स्य पालन व्यवसाय के लिए सबसे महत्वपूर्ण समय होता है इस व्यवसाय से अच्छी आमदनी के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है तथा जल संरक्षण भी होता है कोरोना लॉकडाउन के कारण हुई आर्थिक क्षति की भरपाई के लिये इस समय का यदि मत्स्य पालक सदुपयोग कर ले तो मछली पालन से अच्छी आय अर्जित की जा सकती है चूंकि अधिकांश मछलियां वर्षा ऋतु में प्रजनन करती है और इनके बच्चे जिन्हें हम फ्राई व जीरा कहते है तैयार होते है मत्स्य नर्सरी में इनका संचय कर मत्स्य अंगुलिका तैयार की जाती है यही मत्स्य अंगुलिका का बरसात के समय संचय कर मत्स्य उत्पादन किया जाता है यह सब कार्य वर्षा ऋतु में ही किये जाते है मछली पालन से एक ओर जहां अच्छी आय के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है वहीं दूसरी ओर जल संचय तथा भूमिगत जल के स्तर में वृद्धि भी होती है मत्स्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार 2018–19 में प्रदेश में मछली का की उत्पादकता लगभग 4500 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी तथा प्रदेश में उत्पादन लगभग 6,62000 मीट्रिक टन था उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है किसान भाई मत्स्य पालन के साथ–साथ बागवानी, उद्यान, पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते हैं उन्होंने बताया की मछली एक शक्ति वर्धक एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ है यह खाने में सुपाच्य होती है और इसमें आवश्यक अमीनो एसिड तथा प्रोटीन भी अधिक मात्रा में पाई जाती है इसके अतिरिक्त इसमें वसा,

कैल्शियम व खनिज भी पाए जाते है जिसके कारण संतुलित आहार में मछली की विशेष उपयोगिता है डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि गांव क्षेत्र में कृषक भाई अनुपयोगी तालाबों की सफाई करने के उपरांत उसमे मत्स्य अंगुलिकाओं का संचय करे उन्होंने बताया की वर्षा का मौसम मछली पालने के लिए उपयुक्त है मत्स्य व्यवसाय एक श्रम प्रधान व्यवसाय है इस व्यवसाय में कम पूंजी लगाने पर अधिकतम लाभ अर्जित कर सकते है उन्होंने बताया कि मछली पालने के लिए सबसे पहले तालाबों में उपस्थित खरपतवार की सफाई कर ले तालाबों में खरपतवार जैसे जलकुंभी, लैम्निा, हाइड्रिला आदि होते है अधिक जलीय वनस्पति होने की दशा में रसायनों का प्रयोग जैसे करनेक्सान 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तालाब में प्रयोग कर सफाई करनी चाहिए तथा बंधे आदि दुरुस्त कर लेना चाहिए।उन्होंने बताया की मछलियों की बढ़वार में जल की क्षारीयता का विशेष महत्व है मछली का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए जल की क्षारियता 7.5–8.5 तथा घुलित ऑक्सीजन की मात्रा 5 मिलीग्राम प्रति लीटर आवश्यक होती है जल की उत्पादकता हेतु क्षारीयता का निर्धारण करने के लिए गोबर की खाद और चूने का प्रयोग किया जाता है उन्होंने बताया कि चूना जल की क्षारीयता का संतुलन करता है साथ ही साथ मछलियों में होने वाली अधिकांश बीमारियो से बचाव भी होता है वही गोबर की खाद से मछली का प्राकृतिक भोजन जिसे प्लेंकटान कहते हैं उत्पन्न होता है परंतु जब तालाब में वैज्ञानिक तरीके से मछलियों को अधिक संख्या में पाला तो उनके भोजन की अतिरिक्त व्यवस्था करनी होती है इसके लिए सरसो की खली और धान के कना का 50– 50 प्रतिशत (वजन) के हिसाब से भोजन के लिए प्रयोग करते है इससे मछलियों को पौष्टिक आहार प्राप्त होता है और अच्छी बढ़वार मिलती है उन्होंने कहा कि जब तालाब की तैयारी हो जाए तो मत्स्य विभाग के माध्यम से मछली के बच्चों जिन्हें अंगुलिका कहते है,की बुकिंग करा ले उन्होंने बताया कि आमतौर पर मछली पालन हेतु भारतीय मछली मेजर कॉर्प (रोहू, कतला, नैन) और विदेशी प्रजाति में कौमन कार्प, ग्रास कॉर्प और सिल्वर कॉर्प का चयन सबसे उपयुक्त रहता है आज कल शहरों में पंगेसियस मछली की भी बहुत मांग है।

प्रति हेक्टेयर तालाब में मछली पालन से

2 से 3 लाख की वार्षिक आय संभव

सीएसए के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ. आनंद स्वरूप श्रीवास्तव की मत्स्य पालकों के लिए सलाह

■ सहारा न्यूज ब्यूरो।

कानपुर।

सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के मत्स्य वैज्ञानिक के वर्षा ऋतु में मत्स्यपालकों के लिए सलाह जारी की है। उन्होंने कहा है कि वैज्ञानिक विधि से मछली पालन करके एक हेक्टेयर तालाब से प्रतिवर्ष ₹ 2 से 3 लाख तक की आय आसानी से प्राप्त की जा सकती है। इस व्यवसाय से अच्छी आय के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है तथा जल संरक्षण भी होता है। मत्स्यपालक इस समय का सदुपयोग कर लें तो कोरोना लॉकडाउन के कारण हुई क्षति की भरपाई की जा सकती है।

विवि के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ.आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने बताया कि अधिकांश मछलियां वर्षा ऋतु में प्रजनन करती हैं। इनके बच्चे को फ्राई या जीरा कहा जाता है। मत्स्य नर्सरी में इनका संजय कर मत्स्यअंकुलिका तैयार की जाती है। इसी से बरसात के समय मत्स्य उत्पादन किया जाता है। यह सब कार्य वर्षा ऋतु में ही किये जाते हैं। मत्स्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार 2018-19 में प्रदेश में मछली की उत्पादकता लगभग 4500 किग्रा प्रति हेक्टेयर थी तथा प्रदेश में उत्पादन लगभग 6,62,000 मैट्रिक टन था। डॉ.श्रीवास्तव ने कहा कि किसान मत्स्य पालन के साथ बत्तख, उद्यान, पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ भी अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि किसान अनुपयोगी तालाबों की सफाई करने खर-पतवार हटाने के उपरांत उसमें मत्स्य अंगुलिकाओं का संचय करें। उन्होंने बताया कि आमतौर पर मछली पालन हेतु भारतीय मछली मेजर कार्प (रोहू, कतला व नैन) व विदेशी प्रजाति में कॉमन कार्प, ग्रास कार्प व सिल्वर कार्प का चयन सबसे उपयुक्त रहता है। आजकल शहरों में पंगेसियस मछली की भी बहुत अधिक मांग है। मत्स्य पालक समय की मांग के अनुसार पंगेसियसल का उत्पादन करें। मत्स्य अंगुलिका जितनी बड़ी होगी उतना उपयुक्त रहेगा। मछली के छोटे बच्चों में मृत्यु दर अधिक होती है।

संतुलित आहार है मछली

मछली एक शक्तिवर्द्धक एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ है। यह खाने में सुपाच्य होती है। इसमें आवश्यक अमीनो एसिड व प्रोटीन भी अधिक मात्रा में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें वसा, कैल्शियम व खनिज भी पाये जाते हैं। इन सबके कारण संतुलित आहार में मछली की विशेष उपयोगिता है।

डॉ. आनंद स्वरुप।

हिन्दी दैनिक

R.N.I.:UPHIN/2012/42725

हिन्दुस्तान का इतिहास

कानपुर से प्रकाशित

वर्ष : 10 अंक : 59 हिन्दी दैनिक कानपुर रविवार,20 जून ,2021 पृष्ठ : 8 मूल्य : 2 रुपये

आय, जल संरक्षण और पौष्टिक आहार हेतु वर्षा ऋतु में करे मछली पालनः डॉ ए एस श्रीवास्तव

कानपुर– ––हिंदुस्तान का इतिहास–– चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ० आनन्द स्वरूप श्रीवास्तव, प्रभारी मत्स्यकी ने बताया कि वर्षा ऋतु मत्स्य पालन व्यवसाय के लिए सबसे महत्वपूर्ण समय होता है इस व्यवसाय से अच्छी आमदनी के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है तथा जल संरक्षण भी होता है कोरोना लॉकडाउन के कारण हुई आर्थिक छति की भरपाई के लिये इस समय का यदि मत्स्य पालक सदुपयोग कर ले तो मछली पालन से अच्छी आय अर्जित की जा सकती है चूंकि अधिकांश मछलियां वर्षा ऋतु में प्रजनन करती हैं और इनके बच्चे जिन्हें हम फ्राई व जीरा कहते है तैयार होते है मत्स्य नर्सरी में इनका संचय कर मत्स्य अंगुलिका तैयार की जाती है यही मत्स्य अंगुलिका का बरसात के समय संचय कर मत्स्य उत्पादन किया जाता है यह सब कार्य वर्षा ऋतु में ही किये जाते है मछली पालन से एक ओर जहां अच्छी आय के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है वही दूसरी ओर जल संचय तथा भूमिगत जल के स्तर में वृद्धि भी होती है मत्स्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार 2018–19 में प्रदेश में मछली का की उत्पादकता लगभग 4500 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी तथा प्रदेश में उत्पादन लगभग 6,62000 मीट्रिक टन था उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है किसान भाई मत्स्य पालन के साथ–साथ बतख, उद्यान, पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते है उन्होंने बताया की मछली एक शक्ति वर्क एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ है यह खाने में सुपाच्य होती है और इसमें आवश्यक अमीनो एसिड तथा प्रोटीन भी अधिक मात्रा में पाई जाती है इसके अतिरिक्त इसमें वसा, कैल्शियम व खनिज भी पाए जाते है जिसके कारण संतुलित आहार में मछली की विशेष उपयोगिता है डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि गांव क्षेत्र में कृषक भाई अनुपयोगी तालाबों की सफाई करने के उपरांत उसमे मत्स्य अंगुलिकाओं का संचय करे उन्होंने बताया की वर्षा का मौसम मछली पालने के लिए उपयुक्त है मत्स्य व्यवसाय एक श्रम प्रधान व्यवसाय है इस व्यवसाय में कम पूंजी लगाने पर अधिकतम लाभ अर्जित कर सकते है उन्होंने बताया कि मछली पालने के लिए सबसे पहले तालाबों में उपस्थित खरपतवार की सफाई कर ले तालाबों में खरपतवार जैसे जलकुंभी, लैमिना, हाइड्रिला आदि होते हैं अधिक जलीय वनस्पति होने की दशा में रसायनो का प्रयोग जैसे फरनेक्सान 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तालाब में प्रयोग कर सफाई करनी चाहिए तथा बंधे आदि दुरुस्त कर लेना चाहिए।उन्होंने बताया की मछलियों की बढ़वार में जल की छारीयता का विशेष महत्व है मछली का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए जल की छारियता 7.5–8.5 तथा घुलित ऑक्सीजन की मात्रा 5 मिलीग्राम प्रति लीटर आवश्यक होती है जल की उत्पादकता हेतु छारीयता का निर्धारण करने के लिए गोबर की खाद और चूने का प्रयोग किया जाता है उन्होंने बताया कि चूना जल की छारीयता का संतुलन करता है साथ ही साथ मछलियों में होने वही अधिकांश बीमारियो से बचाव भी होता है वही गोबर की खाद से मछली का प्राकृतिक भोजन जिसे प्लेकटान कहते हैं उत्पन्न होता है परंतु जब तालाब में वैज्ञानिक तरीके से मछलियों को अधिक संख्या में पाला तो उनके भोजन की अतिरिक्त व्यवस्था करनी होती है इसके लिए सरसो की खली और धान के कना का 50– 50 प्रतिशत (वजन) के हिसाब से भोजन के लिए प्रयोग करते है इससे मछलियों को पौष्टिक आहार प्राप्त होता है और अच्छी बढ़वार मिलती है उन्होंने कहा कि जब तालाब की तैयारी हो जाए तो मत्स्य विभाग के माध्यम से मछली के बच्चों जिन्हे अंगुलिका कहते है,की बुकिंग करा लें उन्होंने बताया कि आमतौर पर मछली पालन हेतु भारतीय मछली मेजर कॉर्प (रोहू, कतला, नैन) और विदेशी प्रजाति में कॉमन कार्प, ग्रास कॉर्प और सिल्वर कॉर्प का चयन सबसे उपयुक्त रहता है आज कल शहरों में पंगेसियस मछली की भी बहुत मांग है मत्स्य पालक समय की मांग के अनुसार पंगेसियस मछली का अवश्य उत्पादन करे मत्स्य अंगुलिका जितनी बड़ी होगी उतना उपयुक्त होगा छोटे बच्चों में मृत्यु दर होना स्वाभाविक है वर्षा ऋतु में एक बात का मुख्य रूप से ध्यान रखना चाहिये, चुकी मछली पानी मे घुलित ऑक्सीजन का प्रयोग अपने श्वसन के लिए करती है और पानी में इसकी उपलब्धतता जलीय वनस्पति के प्रकाश संश्लेषण के द्वारा होती है वर्षा ऋतु में अधिक समय तक बदली होने के कारण से कभी कभी प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया कम हो जाती है परिणाम स्वरूप ऑक्सीजन की कमी हो जाती है और मछली अपना मुंह ऊपर निकलती हुई दिखती है यदि ऐसा हो तो पानी में उथल पुथल करना चाहिए और ताजे पानी की फव्वारा रूप मे आपूर्ति करना चाहिए जिससे वातावरण की ऑक्सीजन पानी मे घुल जाए डॉ आनन्द श्रीवास्तव ने बताया की मत्स्य पालक वैज्ञानिक विधि से मछली पालन करके एक हेक्टेयर तालाब से प्रतिवर्ष ₹ 2 से 3 लाख की आमदनी आसानी से प्राप्त कर सकते है।